ROLE OF NAPOLEON AS FIRST CONSUL

(प्रथम कॉन्सल रूप में नेपोलियन के सुधार)

For:U.G. ,Part-2,Paper-4

1799 ई. में नेपोलियन बोनापार्ट ने सत्ता को हाथों में लेकर अपनी स्थिति सुदृढ़ करने तथा फ्रांस को प्रशासनिक स्थायित्व प्रदान करने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में सुधार किए। यह नेपोलियन के सभी राजनीतिक विजयों की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण तथा स्थाई कार्य थे। दरअसल इन सुधारों को लागू करने के पीछे कई कारण थे। नेपोलियन डायरेक्टरी की शासन को उलट कर अपनी तानाशाही कायम कर ली थी । कट्टर क्रांतिकारी इसके प्रबल विरोधी थे। अपनी स्थिति को मजबूत बनाने तथा विरोधियों का अंत करने के निमित्त नेपोलियन को पूरे राष्ट्र के समर्थन की आवश्यकता थी। ऐसे में आंतरिक क्षेत्र में सुधार लाकर वह क्रांति के लाभों को स्थिर और स्थाई बना सकता था तथा इस प्रकार वह पूरे राष्ट्र समर्थन प्राप्त कर सकता था। यश अर्जित करने की कामना उसके सुधारों का दूसरा प्रेरक तत्व था। वह स्थाई महत्व के कुछ काम करना चाहता था ताकि फ्रांस की भावी पीढ़ियां आदर के साथ उसको

Scanned with CamScanner

याद करें। इन्हीं उद्देश्यों से प्रेरित होकर उसने फ्रांस में कई सुधारवादी योजनाएं लागू की।

1. **<u>संविधान निर्माण</u>**: प्रथम काउंसल बनने के बाद नेपोलियन ने फ्रांस के लिए एक नवीन संविधान का निर्माण किया जो। यह क्रांति युग का चौथा संविधान था। इसके द्वारा कार्यपालिका शक्ति तीन काउंसलरो में निहित कर दी गई। प्रधान काउंसिल(नेपोलियन) को अन्य काउंसलरों से अधिक शक्ति प्राप्त थी। वास्तव में संविधान में गणतंत्र का दिखावा तो जरूर था लेकिन राज्य के संपूर्ण सत्ता नेपोलियन के हाथों में केंद्रित थी।
2. **<u>प्रशासनिक सुधार</u> :** नेपोलियन ने शासन व्यवस्था का केंद्रीकरण किया और डिपार्टमेंट तथा डिस्ट्रिक्ट की स्थानीय सरकार को समाप्त कर ***Prefects*** एवं ***Sub-Prefects*** की नियुक्ति की तथा गांव और शहरों के सभी मेयरों की नियुक्ति सीधे केंद्रीय सरकार द्वारा की जाने लगी। इस प्रकार प्रशासन के क्षेत्र में नेपोलियन ने इन अधिकारियों पर प्रयाप्त नियंत्रण रख प्रशासन को चुस्त-दुरुस्त बनाए रखा। उसने योग्यता के आधार पर इनकी नियुक्ति की।

Scanned with CamScanner

- नेपोलियन का एकतंत्र शासन बड़ा शक्तिशाली था। केंद्र में वह स्वयं उपस्थित था साथ ही स्थानीय संस्थाओं के पदाधिकारियों की वहीं नियुक्ति करता था ।इस प्रकार 10 वर्ष के पश्चात फ्रांस में पुनः स्वेच्छाचारी शासन की स्थापना हो गई ।इस लिहाज से नेपोलियन क्रांति के सिद्धांतों का हंता बना।

3. **<u>आर्थिक सुधार</u>** : नेपोलियन ने फ्रांस की जर्जर आर्थिक स्थिति से उबारने का प्रयत्न किया। इस क्रम में उसने सर्वप्रथम कर प्रणाली को सुदृढ़ किया। कर वसूलने का कार्य केंद्रीय कर्मचारियों के जिम्मे किया तथा उसकी वसूली सख्ती से की जाने लगी। फ्रांस की जनता पर अनेक ***अप्रत्यक्ष कर*** लगाएं।
    - उसने घूसखोरी सट्टेबाजी ठेकेदारी में अनुचित मुनाफे पर रोक लगा दी तथा मितव्ययिता पर बल दिया।
    - वित्तीय गतिविधियों को सुचारू रूप से चलाने के लिए सन ***1800 ई.*** में ***बैंक ऑफ फ्रांस (Bank of France)*** की स्थापना की जो आज भी कायम है।

Scanned with CamScanner

- राष्ट्रीय ऋण को चुकाने के लिए उसने पृथक कोष की स्थापना की।
- सेना के खर्चों का बोझ विजित प्रदेशों पर डाला और फ्रांस की जनता को इस बोझ से मुक्त रखने की कोशिश की।
- कृषि सुधारों पर बल देते हुए बंजर और रेतीली इलाकों को उपजाऊ बनाने की योजना बनाई।
- उसने व्यवसायिक संघों (Guild System) को तोड़ दिया। व्यवसायियों को संघ बनाने का अधिकार न रहा। नेपोलियन की दृष्टि में ये संघ विद्रोह और अनुशासनहीनता के केंद्र थे। नेपोलियन ने पूंजीपतियों तथा श्रमिकों के झगड़े को तय करने के लिए ***व्यवसायिक समिति(Industrial Committee)*** का निर्माण किया।
- व्यापार के विकास के लिए नेपोलियन नें आवागमन के साधनों की तरफ ध्यान दिया। सड़कें ,नहरें बनवाई गई ।विभिन्न प्रकार के व्यवसाय की प्रगति के लिए यांत्रिक शिक्षा की व्यवस्था की गई।फ्रांसीसी औद्योगिक वस्तुओं को लोकप्रिय बनाने के लिए

Scanned with CamScanner

प्रदर्शनी के आयोजन को बढ़ावा दिया तथा स्वदेशी वस्तुओं एवं उद्योगों को प्रोत्साहन दिया। बेरोजगारी की समस्या को दूर करने के लिए निर्माण कार्य को प्रोत्साहन दिया।

इस तरह नेपोलियन ने फ्रांस को जर्जर और दिवालियेपन की स्थिति से उबारा ।उसके आर्थिक सुधारों के मूल्यांकन करने पर पता चलता है कि नेपोलियन के कार्य क्रांति विरोधी थे। क्रांति काल में प्रत्यक्ष करों पर बल दिया गया था जबकि नेपोलियन ने अप्रत्यक्ष करों पर बल देकर पुरानी व्यवस्था स्थापित करने की कोशिश की। नेपोलियन ने अर्थव्यवस्था में सक्रिय हस्तक्षेप कर वाणिज्य वादी दर्शन को प्राथमिकता दिया। नेपोलियन ने समाज में कभी भी आर्थिक समता लाने की चेष्टा नहीं की। वह यह कहा करता था कि प्रत्येक प्रकार की समता का सिद्धांत असंभव है ।

4. **<u>शिक्षा संबंधी सुधार</u>** : नेपोलियन ऐसे नागरिकों को चाहता था जो उसके एवं उसके तंत्र के प्रति विश्वास रखें। उसका मुख्य उद्देश्य शिक्षा पर अधिकाधिक सरकारी नियंत्रण

Scanned with CamScanner

रखना तथा विद्यार्थियों को शासन के प्रति निष्ठावान बनाना था ।इसके लिए उसने शिक्षा के राष्ट्रीय एवं धर्मनिरपेक्ष स्वरूप अपनाते हुए निम्नलिखित सुधार किए:

(a) शिक्षा को प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च स्तर पर संगठित किया गया।

- **प्राथमिक स्कूल** - इन का प्रबंध **कम्यून** करती थी। इन पर राज्य का नियंत्रण न था। यह पूरी तरह जनता के हाथ में थी।
- **ग्रामर स्कूल** -इन में विशेष तौर से **लैटिन** तथा **ग्रीक** की शिक्षा दी जाती थी।
- **हाई स्कूल**- इनमें उच्च शिक्षा दी जाती थी। इनकी स्थापना बड़े बड़े नगरों में की गई थी। इनका पाठ्यक्रम सरकार द्वारा निर्धारित किया जाता था तथा सरकार ही इनके अध्यापकों की नियुक्ति करती थी। इन स्कूलों में एक ही पाठ्यक्रम ,एक ही पाठ्य पुस्तकें तथा एक ही वर्दी रखी जाती थी।
- **व्यवसायिक शिक्षा** -इसके लिए **व्यवसायिक स्कूल** की स्थापना की गई थी। सैनिक शिक्षा देने के लिए **मिलिट्री**

Scanned with CamScanner

स्कूलों की स्थापना की गई। अध्यापकों को प्रशिक्षित करने के लिए **पेरिस** में एक **नॉर्मल स्कूल** खोला गया।-

5. **पेरिस विश्वविद्यालय** -संपूर्ण शिक्षण संस्थाएं पेरिस विश्वविद्यालय के अधीन की गई। विश्वविद्यालय में प्रवेश करने के लिए हायर सेकेंडरी परीक्षा पास करना आवश्यक था। इसमें लैटिन, फ्रेंच, विज्ञान, गणित इत्यादि विषयों की शिक्षा दी जाती थी। पाठ्यक्रम में विशेष रुप से इतिहास, गणित तथा चिकित्सा शास्त्र को स्थान दिया गया था। राजनीति तथा दर्शनशास्त्र को प्रोत्साहन नहीं दिया गया था। इतिहास के अध्ययन पर भी कुछ प्रतिबंध थे। नेपोलियन का विचार था कि इन विषयों का अध्ययन गड़बड़ी उत्पन्न कर सकता है।
6. शोध कार्यों के लिए ***इंस्टिट्यूट ऑफ फ्रांस*** की स्थापना की।
7. नेपोलियन ने **नारी शिक्षा** में कोई रुचि <u>नहीं</u> दिखाई। उनकी शिक्षा का भार धार्मिक संस्थाओं पर छोड़ दिया गया।

To be continued.....

BY:ARUN KUMAR RAI
Asst.Professor
P.G.Dept.of History
Maharaja College,Ara.

Scanned with CamScanner